भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 6 | सोमवार, 26-6-2000 | वार्षिक चंदा : 50-00

गुरुपूजन करें

ओहो ! गुरुपूर्णिमा..... हमारे लिए—मांगने का दिन !
और.....
गुरु के लिए—प्रसन्न होकर देने का दिन !
इस बार यूं तो गुरुपूर्णिमा 16 जुलाई 2000, रविवार को आ रही है।
परन्तु,
इसी दिन चन्द्रग्रहण होने के कारण हम
15 जुलाई 2000, शनिवार की सुबह 7.30 बजे से 9.00
गुरुपूर्णिमा निमित्त
महाराज व सभी के आदि गुरु गुणातीत,
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज
व
सभी गुणातीत स्वरूपों का पूजन करके
एवं
धून, भजन, दर्शन, सत्संग से लाभान्वित हो पायेंगे.....

प्रसाद : 9.00 बजे
स्थान : 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052
सूचना : जो उपरोक्त समय पर सुबह लाभ लेने नहीं आ सकते, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।

गुरुपूर्णिमा का मंगल अवसर.....

ओहो ! गुरुपूर्णिमा का महामंगलकारी अवसर.....
सच्चे गुरु की शरण को पाए हुए,
गुरु की शक्ति का अनुभव किए हुए,
गुरु की सेवा के फलस्वरूप अनोखे आनंद की
अनुभूति को पाए हुए,
गुरु द्वारा अद्भुत ज्ञान को पाए हुए,
गुरुभक्ति के अमृतरस को चखे हुए आध्यात्मिक मार्ग पर
निकले शिष्य ही 'गुरुपूर्णिमा' की पूर्ण महिमा समझ पाते हैं

और चातक पक्षी की तरह 'गुरुजयंती' व 'गुरुपूर्णिमा' जैसे पर्वों की राह देखते हैं.....

शास्त्रों में 'गुरु' की एक सुन्दर परिभाषा है–'गु' अर्थात् अंधकार और 'रु' अर्थात् उसे दूर करने वाला ! अज्ञान के अंधकार को जो दूर करे वह गुरु !! जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त करके जीतेजी परमपद की प्रतीति कराए वह गुरु ! इससे भी आगे–हमारी चेतना के विकास के लिए और जब तक हम सम्पूर्ण ब्राह्मीस्थिति को न पायें तब तक हमारे साथ रहें–हमारे लिए परिश्रम करा करें..... हमारे चैतन्य के विकास के लिए लगे रहें–हमारे पीछे पड़े रहें–वह गुणातीत गुरु !

गुरु भगवान की निशानी है। उन्हें देख कर भगवान के अस्तित्व की प्रतीति होती है। यदि ब्राह्मीस्थिति वाले गुरु विद्यमान ना हों, तो मुमुक्षु में भगवान भजने की श्रद्धा या उमंग जाग्रत ही नहीं होगी। जैसे कि मनुष्य चंद्र पर पहुँचा है, तो यह विश्वास हुआ कि भले ही कठिन हो, किन्तु चन्द्र पर जा तो सकते हैं। वैसे ही ऐसे प्रत्यक्ष गुरु को देख कर मुमुक्षु को यह विश्वास होता है कि गुरु की कृपा से मैं भी उनके जैसी ब्राह्मीस्थिति और प्रभुभक्ति पा सकता हूँ। सो, गुरु हमेशा प्रगट होने चाहिए।

गुरु के बिना तो भरतजी की उर्ध्वगति के बदले अधोगति हुई क्योंकि सच्चे गुरु के मार्गदर्शन के बिना वे मृग के बच्चे के मोह में फंस गए और आखिरकार उन्हें एक जन्म मृग का लेना पड़ा..... तभी तो उन्होंने राजा रहूगण को सचेत किया कि–'आत्मा-परमात्मा का अपरोक्ष ज्ञान, तप-यज्ञ-गृहत्याग-वेदपठन-जल-अग्नि या सूर्य की उपासना से प्राप्त नहीं होता; किन्तु सत्पुरुष के चरणों की रज का अभिषेक जब मस्तक पर होता है, तब प्राप्त होता है अर्थात् गुरु-सेवा से मोक्ष होता है।' बड़े-बड़े त्यागी-तपस्वी भी गुरु ज्ञान के बिना पतन के गर्त में गिरे हैं। इसलिए गुरु ही भगवान को पाने का सही मार्ग दिखा सकते हैं। भगवान के रास्ते चलना तलवार की धार पर चलने जैसा है। पर, पुरुषप्रयत्न को गुरु की कृपा–सहाय मिलते ही गति मिलती है।

भारतीय संस्कृति और वैदिक परंपरा की अनोखी विशिष्टता के रूप में ब्रह्मनिष्ठ और श्रोत्रीय सच्चे सद्गुरु की अनिवार्यता लिखी गई है, मानी गई है और बनी रही है। गुरु-पूर्णिमा के मंगल दिन उत्साह और उमंग से हर कोई गुरुपूजन करे, गुरु को ही सर्वस्व मान कर समर्पण करे यह स्वाभाविक बात है। लेकिन यदि सच्चे गुरु को पहचान कर जीव जोड़ा ना हो, तो गुरु और शिष्य दोनों को यह संबंध खतरनाक सिद्ध होता है..... बंधन बढ़ता जाए और ऐसी गुरुतंती जैसा कोई पाप भी नहीं है। अनंत जन्मों के सुकृत जब उदय होते हैं तब ऐसे गुरु मिलते हैं और ऐसे गुरु मिलना–वही जीवन का परम सौभाग्य है। ऐसे गुणातीत स्वरूपों का संबंध होने के कारण ही तो हम सब निहाल हो गए हैं.....

सच्चा सद्गुरु भगवान का स्वरूप कहा जाये। उन्हें पहचान कर, उनके द्वारा अनुभव करके, सम्यक् निर्दोषभाव का पूजन हमें करना है। गुणातीत संत की वह परंपरा हमारे यहां अखंडित प्रगट है। सभी शिष्य अपने-अपने अंग के मुताबिक सद्गुरु में जुड़ते रहते हैं।

इतना पक्का करना कि सच्चा सद्गुरु मूल अज्ञान टाल कर, प्रकृति का रुपांतर करके, दैवी गुणों की उपलब्धि करवा कर, जीतेजी ब्रह्मरूप बना कर, भगवान का सुख लेता करके स्वतंत्र और निर्दोषबुद्धि युक्त ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करवाता है। भगतजी महाराज और जागास्वामी ने मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी द्वारा ऐसी स्थिति प्राप्त करी थी। गुरुहरि योगीजी महाराज ने संतों, पार्षदों को अंतर के ऐसे आशीर्वाद अति करुणा करके दिये हैं। सभी सत्संगी को भी दुर्लभ से दुर्लभ एकांतिकभाव प्राप्त हो ऐसी शुभाशीष दी है; तो सभी भेदबुद्धि दूर करके, अविरोध दृष्टि कायम रख कर, ऐसे चैतन्यस्वरूप पुरुषों का सच्चा गुरुपूजन करें और उनके अभिप्राय के मुताबिक की भक्ति और ऐसा सुहृद्भाव अखंड रहे ऐसी याचना करें–हमारे लिए–आज मांगने का दिन है, गुरु के लिए–प्रसन्न होकर देने का दिन है।

तो, आइये निम्न कथावार्ता द्वारा हम अपने जीवन में परिवर्तन लाएं और जीवदशा के कारण जो गल्तियाँ हुईं, वे अब हम अपने जीवन में ना दोहराएं और अपनी पूर्णाहुति करा लें.....

.....माया के पर के पुरुष को हम क्या गुरुदक्षिणा दे सकेंगे? अमायिक पुरुष मायिक पदार्थों से त्रिकाल में भी प्रसन्न नहीं होते। सो, गुरु की प्रसन्नता के मुताबिक, उनकी मर्जी में वर्तना वही एक आदर्श हमारे समक्ष रहता है। तो आज के पवित्र दिन बड़े पुरुष प्रसन्न हो जाएं इस हेतु नीचे के मुद्दों पर विचार करें–

(1) इतिहास साक्षी है कि भक्ति में रसबस सुधन्वा को प्रभु प्रसन्न करने में 'लोक' बाधारूप हुआ; माता के वचन में विश्वास आया और क्षत्रिय–धर्म अदा करने प्रभु के सामने लड़े। सुधन्वा ने समग्र का भोग दिया, लेकिन इस लोक की ज़रा-सी छांट रह गई, जिसके कारण वह प्रसन्नता का पात्र न बन सका। मछीआव (गांव) की फईबा की भी यही हालत हुई। छत्तीस बार सहजानंदस्वामी ने उसके यहां भोजन ग्रहण किया ! महाराज ने वहां वड़ताल जैसा बड़ा मंदिर बनवाने का संकल्प किया था। फईबा ने सर्वस्व का भी अर्पण किया, लेकिन इस लोक की ज़रा-सी छांट रह जाने के कारण महाराज

ने जब उसे कहा कि तुम्हारी बहु को मायके से वापिस बुला लो.... किसी व्यवहारिक अनबन के कारण फईबा उसकी बहु को बुला नहीं रहे थे..... लौकिक बड़प्पन में फंस कर श्रीजी महाराज का वचन उससे माना नहीं गया। परिणामस्वरूप महाराज भोजन करे बिना ही मछीआव से चले गये.... अंतर की प्रसन्नता मिली नहीं।

सो, गृहस्थों को तो खास ध्यान यह रखना है कि उन्हें समाज में रहना तो है ही, लेकिन समाज की कोई व्यक्ति-पदार्थ या प्रसंग बड़े पुरुष को प्रसन्न करने में अंतरायरूप न बने। बड़े पुरुष की एक अनादि की रीत है ही.... **हमारे जीव में उसके बिना यदि कोई चीज़ प्यारी रहेगी, तो उस वृत्ति को या व्यक्ति को जीव में से निकाले बिना रहेंगे नहीं।** सो मान, लोभ, स्वाद वगैरह दोष को निकालने के लिए संत हमारे लोक-भोग-देह का खंडन करें, तब किसी भी संजोग में मनुष्यभाव नहीं आए, उसकी खास सावधानी रखनी पड़ेगी ही।

(2) हर एक गुणातीत स्वरूप ने रांकभाव से–गुलामभाव से अल्प संबंध वालों की सेवा करी है। भक्ति और सेवा के सिवा उनके जीवन में कोई चीज़ प्यारी नहीं रही। गुरुहरि योगीजी महाराज ने लगातार 60 वर्ष तक सेवा करके अपनी देह को घिस डाला। शास्त्रीजी महाराज के अल्प संबंध वालों को सर का ताज मान कर सेवा करी। बाल्यावस्था में जब जूनागढ़ रहते, तभी से निरंतर सद्गुरुओं की खूब सेवा करी। उन्होंने किसी की प्रकृति देखी नहीं और सभी के दास बने रहे। जूनागढ़ से आने के बाद लगातार 20 वर्ष तक विज्ञानदासस्वामी की व शास्त्रीजी महाराज के संबंध वाले संतों–हरिभक्तों की शास्त्रीजी महाराज के भाव से ही सेवा करी। विज्ञानदासस्वामी की तेज़ प्रकृति को भी गुरुहरि योगीजी महाराज हंसते मुखारविंद से स्वीकारते। त्रिकाल में भी उनके मुखारविंद से हास्य गया नहीं। निर्गुणदासस्वामी भी उनका इतना ही अपमान करते। लेकिन उनके हृदय की मिठास एवं मुखारविंद की प्रफुल्लता ज़रा भी कम नहीं हुई। खुद वर्त कर सुहृद्भाव का मूर्तिमान दर्शन सभी को कराया। किसी के पास सेवा या सुहृदभाव की किंचित आशा उन्होंने रखी नहीं। तो खुद शास्त्रीजी महाराज के अंतर की प्रसन्नता का पात्र बन गए। प.पू. बापा का, प.पू. स्वामिजी का, प.पू. काकाजी का, प.पू. पप्पाजी का–हर एक चैतन्य स्वरूप का यह सनातन सूत्र है–''सुहृद्भाव पकड़े रख कर जो कर पाओ उतना करो।'' इसी सूत्र को अखंड घोटने जैसा है।

(3) तीसरी एक रहस्य की बात यह है कि हर एक व्यक्ति को आडंबर, दंभ या दिखावे से जीना खूब जँचता है। अहंता की वह वृत्ति करोड़ों वर्ष से लहु की बूंद-बूंद में फैल गई है, जिसके फलस्वरूप बड़े पुरुष के आगे सरलता से वर्त नहीं सकते, स्वधर्म ठीक से अदा नहीं हो पाता। महाराज के समय में जीवाखाचर और अलैयाखाचर ने खूब सेवा करी, लेकिन महाराज ने जब मान के खंडन के प्रसंग खड़े किए तो सत्संग से दूर हो गए। परम चैतन्यानंदस्वामी, पूर्णानन्दस्वामी, निर्विकल्पानंदस्वामी, दीनानाथ भट्ट वगैरह परमहंसों और हरिभक्तों को मान का खंडन होने पर महाराज के प्रति के भाव में फर्क आ गया। ऐसे प्रसंग बड़े या छोटे स्वरूप में हर एक व्यक्ति के जीवन में आने ही वाले हैं। तो, साधक को खास ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी संजोग में–त्रिकाल में भी अभाव नहीं लेना है। ऐसे समय में खुद का दोष देख कर बापा को ही कर्ता-हर्ता मान कर, उनके प्रति सर्वोपरि भाव रख कर भजन और सेवा का बल लेना। सारा समाज ब्रह्मनियंत्रित है। बापा ही प्रसंग खड़े कर रहे हैं, तो फिर किस का अभाव लेना ? सो, ऐसे प्रसंगों पर केवल प्रार्थना या भजन का बल लेना।

(4) चौथी रहस्य की बात यह कि सुहृदभाव के साथ-साथ किसी भी संजोग में स्वधर्म चूकना नहीं। हर एक साधक का निजी स्वधर्म है। अंतर के देवताओं को खूब मान चाहिए होता है। मन को मान जँचता है। मन मान को छोड़ने तैयार नहीं–वह उसका जीवन है। सो, साधक खास ध्यान रखें कि बड़े पुरुष को प्रसन्न करने में कभी भी स्वधर्म चूके ही नहीं। पहले जब तक खुद का सत्संग पक्का ना हो जाए तब तक दूसरे को सत्संग कराने दृष्टि करना ही नहीं। '16 आना वर्तो तभी दो आना बोलना।' कथा करने में या सेवा करने में दंभी सद्गुरुपन की छांट नहीं आए उसका खास ध्यान रखना। मनधारी प्रवृत्ति या मनधारी सेवा बिलकुल छोड़ देनी।

तो, ऊपर के चार मुद्दों के मुताबिक गुरुपूजन करके निम्न गुरुदक्षिणा देने संकल्प करें–

हे प्रभु,

(1) हम त्रिकाल में भी मनमुखी ना वर्तें।
(2) लोक-भोग-देह हमें खींच नहीं जाएं।
(3) भक्तों की भक्ति में केवल जीवन बिताएं।
(4) हमारे जीवन में केवल एक तू ही प्रधानरूप से रहे ऐसी भावना दृढ़ हो जाए।
(5) एकांतिक मुक्तों के साथ अपनेपन का भाव या रसबसता हो जाए; उनकी रीति से वर्ता जाए, उनका पसंदीदा वर्ता जाए....

यही सच्चा गुरुपूजन करा कहा जाए, गुरुहरि सभी को खूब बल दें यही प्रार्थना !

1975–श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका के सौजन्य से

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

हर साल की तरह प.पू. गुरुजी की सेरेछाया में 15 मई 2000 की सुबह से जपयज्ञ के अनुष्ठान की शुरुआत हुई..... सुबह 6.30 तक में **'ताड़देव'** के हॉल में आत्मीय भक्तगण इकट्ठा हो गया था। 'ताड़देव' के प्रसन्नवदन करुणाशंकर महाराज मुमुक्षुओं की आध्यात्मिक भूख, बेसब्री देख कर बहुत ही खुश नज़र आ रहे थे.... सूरत से आए पुराने जोगी पू. देवी बहन के दामाद प.भ. अमृत वडिया साहेब व प.भ. आर.पी. गुप्ताजी ने दीप प्रज्जवलित करके उद्घाटन किया। अब की बार प.भ. आशिष व अन्य बच्चों ने खूब परिश्रम करके प.पू. गुरुजी का आसन विशेष रूप से गढ़डा के दादाखाचर के दरबार की स्मृति कराता हुआ बनाया था जो कि हॉल में प्रवेश करते देखते ही भीतर को स्पर्श कर जाता था।

इस बार प्रकाशित हुई प.पू. काकाजी के आखिरी ज़ाहिर प्रवचन की पुस्तिका **'मोती बिखरे चौक में'** को विस्तृत रूप से समझने का प.पू. गुरुजी ने प्रोग्राम रखा था। प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसे बड़े पुरुषों की भाषा जब तक उनसे मिले संत द्वारा नहीं समझेंगे; तब तक हमें उनकी बातों का घर-रहस्य व तात्पर्य समझ ही नहीं आयेगा। प.पू. काकाजी ने खूब कृपा करके हमें प.पू. गुरुजी जैसे संत भेंट स्वरूप दिए हैं, जो हमें वचनामृत, स्वामी की बातें, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसी गुणातीत विभूतियों के चरित्र, प्रवचन आदि को खूब बारीकी से समझते हैं.... प.पू. काकाजी को कोटि-कोटि वंदन एवं करोड़ों धन्यवाद ! प.पू. गुरुजी द्वारा समझाये इन गूढ़तम अर्थ–रहस्यों का लाभ दूर-सुदूर बैठे सभी हरिभक्त ले सकें, इस भावना से **'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'** स्तंभ के अंतर्गत मुख्य पंक्तियों के रूप में इन्हें निरंतर देते रहेंगे..... आप सभी के जीवन में ये बातें व्यावहारिक व आध्यात्मिक समाधान देकर सदा सर्वदा सुखी रखें–यही भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !

✡ महाराज ने वचनामृत अंत्य. 21 में कहा है कि ऐसे दृढ़ सत्संगी वैष्णव–यही हमारी नात-जात-बिरादरी है, यही हमारे सगे–रिश्तेदार हैं..... यह बात कईयों ने गाई भी, पर धाम, धामी, मुक्तों को सत्य मान कर सामूहिक रूप से जीवन जीने की शुरुआत करी ताड़देव से प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, पू. कांतिकाका ने ! हां–दादाखाचर, पर्वतभाई जैसे मुक्त बेशक ऐसा ही जीवन जिए हैं–लेकिन सामूहिक रूप से इस बात को जो बहती करी, वो तो इस त्रिपुटी ने ! **इसी के फलस्वरूप आज एक दिव्य परिवार–गुणातीत समाज दिखाई पड़ता है। उसकी बदौलत आज हम सब यहां इकट्ठे बैठे हैं....** तो हमारी सब की फर्ज़ यह है कि इन तीनों को कभी भूलें नहीं–नज़रअंदाज़ न करें–वर्ना हम कृतघ्नी कहलाए जायेंगे।

✡ खूब ध्यान रखें कि यह एक महीना जो हम प.पू. काकाजी द्वारा गुणातीत समाज को दिया आखिरी संदेशा सुनने वाले हैं, वह प.पू. काकाजी मुझे ही बात कर रहे हैं यूं मान कर सुनेंगे तभी इनकी बात का हार्द पकड़ पायेंगे और वही ग्राह्यदृष्टि–अंर्तदृष्टि कही जाएगी। लेकिन–यह बात तो फलां के लिए है या फलां के कारण है ऐसे लेंगे–तो वह बाह्यदृष्टि कही जाए और.... महाराज ने तो कहा है कि 'बाह्यदृष्टि' वाले की सारी समझदारी–यानि कि भले उसे कितना ही ज्ञान हो–समझदारी हो लेकिन बेकार हैं–यूं प.पू. काकाजी की बातें हमारे लिए व्यर्थ होंगी।

✡ ऐसा भी नहीं समझना कि प.पू. काकाजी ने जो बातें करी उसे वे स्थूलरूप से थे, तब तो हम समझे नहीं और वर्ते नहीं। अब क्या फायदा? उन्हीं के शब्दों में–यह न भूलें कि उन्हें–उनकी बातों को कोई कालभेद–स्थानभेद..... नहीं है। तो, आज भले ही चौदह वर्ष के बाद भी हम उनकी बात को लेकर चलने लगेंगे तो वे स्थूलरूप से थे और हम वर्तते और तब प.पू. काकाजी जितने प्रसन्न होते ऐसी व उतनी ही प्राप्ति व प्रसन्नता आज भी प्राप्त होगी। अरे ! उनकी करी बातें जब सुनते हैं–तो क्या नहीं लगता कि–आज भी उनकी यह बात–यह सीख हमारे लिए विशेष जरूरी है ?

✡ कई बार लगता है कि उनकी बातें समझ नहीं आती। वे होते तो उनको पूछ कर समझ लेते। लेकिन, तर्क-वितर्क के लिए नहीं–बल्कि, 'बात को समझ कर मुझे जीना है'–उस भावना से प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसी विभूति को चार कान में पूछेंगे तो उस बात का हार्द उनके द्वारा समझ पायेंगे ही। प.पू. काकाजी कह कर भी गए हैं कि इस बात को उनसे समझना। सो, वैसे भी उन्हें यह सौंपा ही है।

फिर भी, यदि हमें उनका भरोसा नहीं आता, तो तीव्र भजन करके प.पू. काकाजी को डायरेक्ट पुकार करेंगे

तो वे उस बात के रहस्य की सूझ हमारे भीतर से दे देंगे या किसी में से बोल कर दे देंगे। लेकिन फिर वह हमारे मन के मुताबिक ना हो, हमें वह जमता न हो या नहीं जँचता हो और हम स्वीकारें नहीं वह बात अलग है।

- प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और पू. कांतिकाका के परिवार ने अकल्पनीय कसनी सही है। ताड़देव के फ्लैट में 24 जने रहते थे और–उसमें दो रूम्स तो प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी के लिए..... हॉल में सारे दिन–रात को साढ़े दस-ग्यारह बजे तक भक्तों का आना-जाना..... 24 जनों के बीच एक ही टॉयलेट.....रात को दो-तीन बहनें तो रसोई में सोतीं..... प.पू. बा एक हफ्ते की सब्जी इकट्ठी खरीदने के लिए 'भाईखला' हॉलसेल की मार्किट जाती और वह भी, बस में। तब मैं छोटा था, पू. बा के साथ जाता था। पर, पू. बा के मुंह से हमेशा शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की महिमा की बातें.....! चेहरे पर वही चमक ! यदि हम उस जगह हों तो बोलते कि इतनी सेवा कर-करके हमें क्या मिला ?
- हम इतिहास को कितना भी मचेड़ने जायेंगे; हां, थोड़े समय के लिए हम अपनी वृत्ति को–अपनी ईगो को एन्टरटेन कर पायेंगे। लेकिन, सच्चाई को जितना दबायेंगे वो कभी ना कभी तो कई गुणा फोर्स से उछल कर बाहर आ जायेगी ही।
- यह एक महीना जो हमें भजन करना है उसमें बस यही प्रार्थना करनी है कि हे महाराज ! आपके धाम, धामी, मुक्तों–भगवान, संत, सत्संगी की जैसी है वैसी पहचान हमें करा देना ! इस प्रार्थना में सब कुछ आ जाएगा।
- शास्त्रों में लिखा है–'ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या !' लेकिन क्या हम यह मान कर जीते हैं ? हमें जीना तो है अपने ढंग से और अपेक्षा रखते हैं कि हमें प्रभु की मूर्ति का सुख मिले ! वह कैसे होगा ?
- भगवान संत और मुक्तों को हमने फर्स्ट प्रॉईओरिटी नहीं दी होगी और फिर चाहे कितना ही ज्ञान झड़ा करेंगे, तो वो दूसरों को कभी स्पर्श नहीं करेगा।
- हम चाहे कितना ही दावा रखेंगे कि हम प.पू. काकाजी के हैं; लेकिन–प्रकृति-पुरुष तक की कोई भी विशेषता की जगमगाहट हमें गुमराह करके स्वरूप के संबंध वालों से तनिक भी कार्नरींग न करा पाये, तब ही हम हर एक को एहसास दे पायेंगे कि हम सच में प.पू. काकाजी के हैं।
- जब तक प्रकृति-पुरुष के अंदर तक की कोई भी चीज़ की झक-झमक से हम गुमराह हो जाते हैं और उसके कारण संबंध वालों से अलगाव हो जाता है या क्षोभ हो जाता है, तो जरुर समझना कि हम प.पू. काकाजी के नहीं है।
- प.पू. काकाजी जैसे संत जो जीवन जीते हैं, वो हमारे लिए एक आदर्श बने, एक सिम्बोल (प्रतीक) रहे, हमारे लिए एक प्रेरणा बने इसलिए वो मानव कक्षा की मर्यादा में रहकर ही जीते हैं। वर्ना हम एस्केपिझ्म में चले जायेंगे कि भई ! ऐसा तो सिर्फ प.पू. काकाजी या प.पू. पप्पाजी या प.पू. स्वामिजी ही जी सकते हैं।

  हमें शिक्षा देने के लिए ही वे ऐसा जीते हैं कि अगर तुम भी चाहो तो ऐसा जी सकते हो। पर, हमें जीना नहीं है। वहां हमें घुटन होती है, कसनी सहनी पड़ती है–सो कह देते हैं कि ऐसा तो केवल बड़े संत जी सकते हैं, हम तो जीव हैं..... पर यह हमारा बहाना है, एस्केपिझ्म है। पर यदि हम में सच्चाई होगी, तो बाकी का सब महाराज सेट कर देते हैं।
- प.पू. काकाजी को साक्षात्कार हुआ, उसके बाद उनका सेन्टर ऑफ लाईफ बदल गया। महत्वाकांक्षाओं की जगह गुरुहरि योगीजी महाराज और उनके संबंध वालों ने ले ली।
- 'काकाजी लेन' नाम मैंने इसलिए ही रखवाया है कि मैं कभी यह ना भूलूं कि यहां के लिए सारा परिश्रम प.पू. काकाजी ने किया हुआ है। कभी आगे जाकर सेवक लोग 'गुरुजी-गुरुजी' करने लगें कि गुरुजी ने यह सब किया है और गुरुजी खुद भी कहीं इस भूलावे में आ जायें, तो कोई तो कभी पूछे कि ये 'काकाजी लेन' नाम किस कारण है ? ये भूमिकाएं ऐसी हैं कि हम फिसल जाते हैं।
- और कुछ हमें करना ही नहीं है। एक ही पटरी पर अपनी गाड़ी चलाया करनी है कि संबंध वाले मुक्त सभी हमारे रिश्तेदार हैं–परिवार है इस भावना से मिलजुल कर रहना है। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी को हमसे यही कराना है।
- भक्तों की महिमा सहित सेवा करेंगे तो हमारे स्वभाव-प्रकृति कब टल जायेंगे–पता भी नहीं चलेगा।
- अगर हम सच में मानते हैं कि प्रभु मानवस्वरूप में

मिले हैं तो कोई मुसीबत आने पर हम दूसरे आधार क्यों लेते हैं? अपने प्रभु को क्यों याद नहीं करते ? स्वामिनारायण, स्वामिनारायण !..... अगर हम सच में प्रभु के हैं तो किसी ज्योतिष-तांत्रिक वगैरह के पास कभी जायें ही नहीं। बाकी सभी सहारे छोड़कर केवल भजन का ही सहारा लें।

- सारा कंट्रोलिंग महाराज का है। जरूर मानना कि जिस गुणातीत स्वरूप के साथ महाराज ने हमें जोड़ दिया होगा, वही हमारे लिए इज़ीएस्ट प्रोसेस व शोर्टेस्ट कट होगा..... वहीं दृढ़ता से–एक निष्ठा से चिपके रहना। पर अपने मन के चक्कर में आकर इधर-उधर घूमा करेंगे, तो सत्संग में भटके रहेंगे। हां, दूसरों का डिसरिगार्ड भी नहीं करना.....
- O+God (जीरो+गॉड)=Majority (मेजोरिटी)
- जैसे वॉर पिरियड एक मौका होता है पैसा कमाने का, वैसे ही सत्संग में कोई घटना बन जाए और हम आऊट राईट भक्तों के पक्ष में खड़े रह जाएं तो गुणातीत स्वरूप हमें व्यावहारिक व आध्यात्मिक रूप से निहाल कर देंगे.....

✡✡✡

11 जून प.पू. काकाजी की जयन्ती निमित्त
प.पू. की गुरुजी की आशिष वर्षा

सत्संग के रेडीकल प्रीन्सीपल्स समझेगे, तो बाकी कोरोलरीज़ तो अपने आप सोल्व होती जाएगी। जैसे कि स्वामी की एक बात है कि महाराज का वचन है कि जब कोई दुविधा हो तो हरे पौधे को भी दंडवत् करना, उसमें रह कर भी मैं जवाब दूंगा, सहाय करुंगा, रक्षा करुंगा..... काकाजी ने बताया था कि हरे पौधे का मतलब–**निष्ठा वाला भगत वो हरा पौधा** ! सो, जब कोई बात समझ नहीं आती हो, दुविधा हो कि ये करें या वो करें ? या कोई मुसीबत में हों–कैसे चले करके ? तो ऐसे निष्ठा वाले भगत से पूछना–करना। **उसमें से महाराज बोलेंगे।** ये बात कई बार करी हुई है। लेकिन पता नहीं तुम्हें वो महिमा नहीं होगी या ये बात का भरोसा नहीं। जबकि मेरे दिमाग में यह एकदम फिट हुई है और आपने देखा भी होगा कि जब कोई ऐसी बात होगी तब मैं किसी ऐसे निष्ठा वाले भक्त को कन्सल्ट करके निर्णय लूंगा, इस विश्वास से कि महाराज इसके द्वारा प्रोपर डायरेक्शन देंगे.... अभी ये मनाली जाने का है। मौसम में बदलाव आ गया। आज अखबार में आया है कि बद्री-केदारनाथ के रास्ते पर, नैनीताल वगैरह के रास्ते पर लेन्ड स्लाईडींग हुआ है..... ट्रॉफिक जाम हो जाता है। अग्रवाल ने आकर मुझे कहा कि गुरुजी तलाश करा लो, कहीं हम जाएं आनंद करने और फंसे नहीं वहां जाकर। मेरे मन में सबसे पहली बात ये आती है कि इसमें से काकाजी कुछ सुझव देते होंगे। इसी कारण मैंने फोन किया। बस, ये बात आपको भी पकड़ में आ जाए कि कोई कुछ बोलता है–सलाह देता है, तो देखो महाराज उसमें से बोलते होंगे। अपनी भलाई के लिए कहते होंगे.... वैसे ही, काकाजी ने बताया हुआ है कि पप्पाजी और स्वामिजी में से जो आए उसको मना नहीं करना। देखो ये रेडीकल चीज़ है, बेसिक प्रीन्सीपल है।

.....उस दिन सभा वाकई ऐसी थी। जितने-जितने उस सभा में बोले हर एक को ऐसा फील हुआ कि सभी में से महाराज बोल गए–मुझे भी शूरातन चढ़ गया था, तो मैं भी कम से कम पैन्तीस-चालीस मिनिट बोला..... सुन कर काकाजी ने कहा था कि अब तक मैं ऐसा कहता था कि सारे स्वामिनारायण संप्रदाय में ये मुकुन्द जैसा कोई बुद्धिशाली नहीं है। लेकिन इसने अब की बार जो बात करी, उससे मैं ये कहूंगा कि सारी दुनिया में ऐसा बुद्धिशाली साधु नहीं है। ये सेन्टेन्स का तोल करना। काकाजी तो साक्षात् स्वरूप ! तब भी वो सभा में सब की बात कैसे सुनते होंगे? जैसे कि ग्राह्यदृष्टि से ! तब वो यह बोल पाए। अभी ये डॉ. शर्मा ने बात करी। क्या किसी को ऐसा हुआ कि इसमें से काकाजी बोल रहे हैं? वच्छराज ने बात करी–क्या ? हमने किसी ने ऐसा सोचा कि इसमें से काकाजी बोल रहे हैं। हम वच्छराज देखते हैं, डॉ. शर्मा देखते हैं, अजय देखते हैं और प.पू. काकाजी हर एक में प्रभु का स्वरूप देखते हैं.....!

हमें ये हो जाये कि हाय मेरा क्या होगा ? मेरा होगा कि नहीं होगा ? सब का करेंगे लेकिन मेरा नहीं करेंगे। क्यों ? तुम सौतेले हो ? ये अपना मायिकभाव है। भगवान को भी क्या पक्षापक्षी रहती है ? संत को ऐसा नहीं है, लेकिन हमारे लेने में फर्क पड़ जाता है। समुन्दर में पानी की खोट नहीं है। लेकिन जैसा बर्तन जाएगा उतना पानी अंदर जाएगा.....

बदला ले वो साधु नहीं, 'अच्छा मैं देख लूंगा'– बोले नहीं, लेकिन मन में भी अगर रखे–अलगाव भी रखें तो हम 'साधु' नहीं; भले गेरवे कपड़े पहने हैं। हमें कोई चीज़ की गांठ नहीं पड़ जानी चाहिए।

'संबंधयोग' शास्त्रों में लिखे हुए सारे सिद्धांतों से परे का ये ज्ञान है। गुण का वहां प्रभाव नहीं..... ऐसे स्वरूप मिलने के बाद इनके प्रति हमें **जितना दिव्यभाव, जितना निर्दोषभाव; इतने हम निर्दोष और इतने हम दिव्य** ! काकाजी ने मुझे एक कागज़ में लिखा था तुम्हारे हर एक चरित्र को मैं दिव्य मानता हूँ, तुम मेरे क्यों नहीं मानते ?

.....इसलिए मैं कई बार कहता हूँ कि किसके पास बैठना, किसकी बातें सुनना वो खूब ध्यान रखो। हम ऐसे की संगत में बैठे रहें कि–'फंलाना तो ऐसा, डिमका तो ऐसा'–तो अपना दिमाग भी ऐसा रहेगा। गुणातीतानंदस्वामी ने यहां तक कहा कि बिस्तर कहां करना, वो भी बड़े संत को पूछ कर करना। बड़े संत बताएंगे कि इसके पास रात को सोने जैसा नहीं है। तेरे कान भरता रहेगा और दिमाग में कूड़ा भरता रहेगा। ऐसे के पास सोओ–बैठो जो दिव्यभाव की बातें करता हो।

....तुम लोग कितने अच्छे हो जो साढ़े छः बजे आ जाते हो। सेवा करने का हमारा हक है। सभा में आया है ना.....

प्रत्यक्ष स्वरूप का प्रकाश, उससे पहले स्टेज है कि मैं प्रत्यक्ष स्वरूप का दास हूँ। पहले दास बनें, फिर प्रकाश बना जाएगा....

काकाजी का शरीर छोड़ना वो भी इनके जीवन की एक घटना ही है। वो उनके जीवन का अंत नहीं है। काकाजी का जीवन कार्य अभी भी ऐसा ही चालू है। जैसे वो मानवस्वरूप में थे तब जो था वैसे ही। मैं जो 'काकाजी गए नहीं, गए नहीं'–कहता हूँ वो उस ढंग से नहीं कहता कि आत्मा तो अमर है–कहीं भी होगी करके या कोई और जगह पर प्रगट हुई है उस ढंग से भी नहीं कह रहा। जैसे वो शरीर में थे और मौजूद थे वैसे के वैसे ही अभी भी ऐसे ही क्रियाशील हैं, उस ढंग से मैं कहता हूँ। पप्पाजी अलग ढंग से यह बोलते हैं कि ऐसे चैतन्यस्वरूप एक बार आते हैं वो कभी जाते ही नहीं। यह भरोसा तो हमें रखना है। वो भरोसा रख करके हम अपना मन का राज्य छोड़ करके गुरु राज्य में एन्टर हो जाएं !

देखो ये 'भुल्का' बनने की जो स्वामिजी अभी बात कर रहे हैं, '86 में काकाजी ने बात करी। उससे पहले भी '74 से करते थे....'

काकाजी को हमेशा ये था कि हम जो कुछ करें मिलजुल कर करें। अलग-अलग कॉर्नरिंग करके ना करें। अलग-अलग वाड़े में रहकर ना करें। लेकिन हम सब ऐसे हैं कि हम सब अपना अलग-अलग करें। बड़ा दर्द बैठा हुआ है ऐसी बातों का–क्योंकि काकाजी की ये सारी बातें बराबर सुनी हुई हैं।

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

चातुर्मास के नियम.....

(बुधवार, 12 जुलाई मंगलवार, से 7 नवम्बर 2000 तक)

विशिष्ट नियम

आप सभी को 'भगवत कृपा' के पिछले कई अंकों द्वारा यह तो ज्ञात हुआ ही होगा कि सन् 2001 में '**स्वामिनारायण महामंत्र**' की द्विशताब्दी बड़ी धूमधाम से मनाई जाएगी। हम सभी ने अलग-अलग रूप में अपने जीवन में इस मंत्र की शक्ति का अनुभव किया ही है और..... द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में हम सभी को इस मंत्र की शक्ति का और भी अनुभव कराने, बल देने गुणातीत स्वरूपों ने–संतों ने स्वामिनारायण महामंत्र लेखन की अलख जगाई है। सो, सभी गुणातीत स्वरूपों के अन्तर की चाहना है कि हर कोई नित्य मंत्र लेखन का नियम अवश्य रखें। परन्तु, यह मंत्र लेखन हम सभी अत्यधिक महिमा से लिखें–केवल खूब अधिक मात्रा में अर्पण करने हेतु नहीं। स्वरूपों की महिमा का मनन-चिंतन–स्मृति करते-करते महिमा सभर हृदय से गुणातीतभाव को पाए ऐसे संत के वचन से लिखेंगे तो उसका फल अनंत गुणा मिलेगा... हमारे भीतर के विकार, स्वभाव-प्रकृति पिघल ही जाएंगे। तो, आइये–जब ऐसे प्रगट गुणातीत स्वरूपों ने हमें मौजरूप यह अमूल्य मौका दिया है तो उनके वचन से यूं महामंत्र लिखने का **विशिष्ट नियम इस चातुर्मास दौरान रखें।**

और....

1. छोटी-छोटी हर एक दैनिक क्रियाओं का आरम्भ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।

2. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
3. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
4. सावन का पूरा महीना यानि–1 अगस्त से 29 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
5. 12 जुलाई-नियम की एकादशी, 23 अगस्त-जन्माष्टमी, 9 सितम्बर-जलझीलनी एकादशी, 7 नवम्बर-कार्तिक शुक्ला एकादशी–इन चारों दिनों अवश्य व्रत रखें।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, स्वामी की बातें, पत्र संजीवनी व ब्रह्मप्रवाह जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. रोज सुबह या सायं या रात्रि को चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
8. हम बोलते हैं कि सर्व कर्ता-हर्ता, सभी के नियंता, सभी के प्रेरक-प्रवर्तक मुझे मिले वे प्रभु हैं। सामान्य संजोगों में तो यह समझदारी हम सब रख लेते हैं। लेकिन प्रसंग पर
कुछ बात बिगड़ती लगे या बिगड़ जाए
या
हमारा मनमाना नहीं बने
या
हमारी बात को किसी ने स्वीकार ना करा हो
या
हम अपमानित हुए हों
या
प्रभु ने हमारी प्रार्थना-अरज ना सुनी हो
तब हमारी यह समझदारी धरी रह जाती है।
और–
ऐसे प्रसंग पर हम–
क्षोभ को पा जाते हैं,
उदास हो जाते हैं,
घबरा जाते हैं,
बेचैन हो जाते हैं,
रो पड़ते हैं,
एक्साईट हो जाते हैं,
चिल्लाने लगते हैं,
ना कहने के शब्द बोल जाते हैं,
ऐंठ जाते हैं,
बौखला जाते हैं,
चिंता में डूब जाते हैं।
ऐसा हो जाए तब प्रायश्चित के रूप में भगवत्सवरूप संत की स्मृति सहित धून करने लग पड़ें–जब तक कि मन शांत ना हो जाए।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 28.6.2000 बुधवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 12.7.2000 बुधवार – देवशयनी एकादशी, व्रत, चातुर्मास प्रारंभ
(3) दि. 16.7.2000 रविवार – गुरुपूर्णिमा **(चन्द्रग्रहण के कारण 15-7-2000 को गुरु पूजन करेंगे)**

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY—DELHI
'*Tardeo*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5953035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393